राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 36 अंक 5 अगस्त 2015 मूल्य 5 रु. पृष्ठ 32

जबलपुर में केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर साथ में राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीहरि बोरिकर

दिल्ली विश्वविद्यालय में 'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम में छात्राओं को सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री श्रीनिवास साथ में दिल्ली प्रान्त के पदाधिकारी

देश भर में चल रहे सदस्यता अभियान की झलकियां

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक मण्डल

आशुतोष

अवनीश सिंह

अभिषेक रंजन

संजीव कुमार सिन्हा

फोन : 011-23216298

ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग :chhatrashaktiabvp.com

वेबसाईट :www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी-50, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली - 110007 से प्रकाशित एवं 102, एल. एस. सी., रिषभ विहार मार्केट दिल्ली-92 से मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

''छात्रशक्ति भवन''

26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नई दिल्ली - 110002

अनुक्रमणिका

विषय	पृ. सं.
संपादकीय	4
कलामः सच्चे पथप्रदर्शक मित्र – अभिषेक रंजन	6
देश भर में उत्साह के साथ मनाया गया राष्ट्रीय छात्र दिवस	9
ब्रिक्स युवा सम्मेलन – सुमित कुमार मौर्य	10
एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान का दिल्ली में शुभारंभ	13
नेपालः भूकम्प राहत कार्यानुभव – सुग्रीव कुमार	14
छात्र संघ के चुनाव की प्रासंगिकता और उपयोगिता	15
मामला बेजा विरोध का – अक्षय दुबे 'साथी'	17
राष्ट्रीय एकात्मता का अनूठा प्रयास – अतुल कुलकर्णी	19
साक्षात्कार	21
'एकात्म मावन दर्शन' का अर्थ	24
हम किस देश के वासी हैं... – अवनीश राजपूत	26
सोहन जी में कभी अंहकार नहीं–भागवत	28
पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि	29
नशामुक्त भारत के लिए जमकर दौड़ी दिल्ली	30

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

एपीजे अब्दुल कलाम नहीं रहे। आयुवृद्ध और अनुभववृद्ध कलाम देश के युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे। एक ओर युवा उनके साथ जुड़ कर जीवन का लक्ष्य पाते थे वहीं कलाम भी युवाओं के साथ इस गहराई से जुड़े थे कि अपनी अंतिम सांस भी उन्होंने युवाओं के बीच ही ली।

भारत के राष्ट्रपति रहते हुए भी उन्होंने अपने नाम के साथ महामहिम जैसे आडंबरों का निषेध ही किया। वर्तमान राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी सहित अधिकांश लोगों ने उन्हें जनता का राष्ट्रपति संबोधित करते हुए श्रद्धांजलि दी। देश की भावी पीढ़ी को भारत के अभ्युदय का लक्ष्य लेकर जुट जाने का संकल्प दिलाने वाले कलाम मेघालय के शिलांग स्थित भारतीय प्रबंधन संस्थान के युवाओं को इस संकल्प से जोड़ कर चले गये।

कलाम मौलिक चिंतक थे और उनकी जीवनयात्रा का अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि उनके जीवन के साथ–साथ प्रारंभिक स्फुट विचार धीरे–धीरे घनीभूत होते गये। वे जिससे भी मिले, अपने विचारों को साझा किया और हर वार्तालाप में से इन विचारों को पुष्ट करने का प्रयास किया।

इसी का परिणाम था कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की कल्पना के साथ उसमें बच्चों और युवाओं की भूमिका के आग्रही कलाम सोच के उच्चतर स्तर पर पहुंच कर लीड इंडिया टु लीड द वर्ल्ड के आह्वान तक पहुंचते हैं। अपनी अंतिम प्रकाशित पुस्तक ट्रांसेंडेन्स में वे लीड इंडिया को प्रथम अध्याय बनाते हैं।

स्वामीनारायण सम्प्रदाय के प्रमुख स्वामी जी के साथ अपने वार्तालाप का उल्लेख करते हुए वे यह स्वीकार करते हैं कि भारत के भौतिक विकास और उसमें नयी पीढ़ी के नियोजन की योजना में अध्यात्म के अभाव को प्रमुख स्वामी जी ने रेखांकित किया। कलाम ने उसे शब्दशः स्वीकार किया और लीड इंडिया की अपनी संकल्पना में जोड़ा।

पहली बार स्व. कलाम के दर्शन का सौभाग्य तब मिला जब 1998 में मुंबई में प्रस्तावित अभाविप के स्वर्ण जयन्ती राष्ट्रीय अधिवेशन के उदघाटन के लिये निमंत्रित करने हेतु उनसे मिलना हुआ। तब तक वे राष्ट्रपति नहीं चुने गये थे किन्तु उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया जा चुका था। मन्द स्मित के साथ उन्होंने विनम्रतापूर्वक आने में असमर्थता जताई और कहा कि वे एक राष्ट्रीय महत्व के कार्य में लगे हैं। बाद में स्पष्ट हुआ कि वे पोखरण द्वितीय की

तैयारी में व्यस्त थे। बाद में भी उनसे जब भी भेंट हुई, उनके विनम्र व्यक्तित्व का प्रभाव सदैव अनुभव किया।

अपने जीवन के विषय में उन्होंने कहा – मैं यह बहुत गर्वोक्ति पूर्वक तो नहीं कह सकता कि मेरा जीवन किसी के लिये आदर्श बन सकता है लेकिन जिस तरह मेरी नियति ने आकार ग्रहण किया उससे किसी ऐसे गरीब बच्चे को सांत्वना अवश्य मिलेगी जो किसी छोटी सी जगह पर सुविधाहीन सामजिक दशाओं में रह रहा हो। शायद यह ऐसे बच्चों को उनके पिछड़ेपन और निराशा की भावनाओं से विमुक्त होने में अवश्य सहायता करे।

कलाम का जाना शोक का विषय नहीं, एक सार्थक और कृतार्थ जीवन की पूर्णाहुति है। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हजारों–लाखों युवाओं ने देशभक्ति और अध्यात्म के पथ पर बढ़ना प्रारंभ किया है। कलाम का भौतिक जीवन और उनकी सूक्ष्म उपस्थिति इन युवाओं के लिये प्रकाशस्तंभ का काम करेंगी।

सदैव की भांति इस अंक में भी आपके लिये विचारोत्तेजक एवं पठनीय सामग्री संकलन करने का प्रयास किया गया है। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका

संपादक

कलाम : सच्चे पथप्रदर्शक मित्र

✍ अभिषेक रंजन

27 जुलाई, 2015 की शाम! रोजाना की तरह छोटे भाई का फोन आया. अमूमन बातचीत की शुरुआत एक दूसरे का हाल–चाल जानने से होती थी। मगर उस दिन फोन उठाते ही आवाज आई, "भैया एपीजे अब्दुल कलाम का देहावसान हो गया। वे शिलांग में भाषण देते वक्त गिर पड़े और अस्पताल ले जाने के कुछ ही समय बाद चिकित्सकों ने उनकी मौत की पुष्टि कर दी," यह जानकर सदमा सा लगा। पहले से ही बीमार शरीर से पस्त पड़ा था, खबर सुनते ही लगा, कोई बेहद अजीज साथ छोड़कर अचानक चला गया। कमोबेश यही हाल उस हर हिन्दुस्तानी का था, जिसके हृदय में हमेशा कलाम नाम सुनते ही एक रचनात्मक तरंग की प्रवाह प्रवाहित होने लगती थी। न जाने लाखों चेहरे उस व्यक्ति के खोने के गम में गमगीन हो गये, जो उसे आजीवन अपने व देश की बेहतरी के लिए सदैव सपने देखने और कर्म करने को प्रेरित करता रहा। जाति, धर्म, क्षेत्र के परे वे तमाम लोग उदास थे, जिसे डॉ. कलाम ने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से जीवन की तमाम दुश्वारियों के बावजूद सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुँचने की सिख दी। किसी ने खूब लिखा, वे मरे तो लोगों के आँखों में आंसू थे लेकिन तालियाँ बजी– वाह रे भारत माता के लाल! क्या शानदार जीवन जिया।

कलाम बच्चों व युवाओं के अत्यंत प्रिय मित्र व मार्गदर्शक थे। कितना प्यार उमड़ता था, कितना विश्वास था कलाम की बातों में, यह उनकी सभाओं में गए लोग बखूबी जानते हैं। हमारी पीढ़ी के युवाओं के सबसे जीवंत आदर्श। अंतिम साँस लेते वक्त तक भी वे सक्रिय रहे। यह हम सबके लिए प्रेरणादायी घटना है कि जिस उम्र में अमूमन लोग धार्मिक यात्राओं व घर के बच्चों के बीच समय गुजारने में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं, वे सदैव एक आदर्श शिक्षक की तरह, एक संवेदनशील कर्मयोगी की भांति भारतभक्ति में लीन रहे, देश के लिए काम करते रहे। सेवानिवृत्ती के बाद मानो उनके जीवन का लक्ष्य ही देश के नौनिहालों को भारत का एक बेहतर भविष्य बनाने हेतु प्रेरित करना हो गया था। राष्ट्रपति बनने के बाद भी उन्होंने इस कार्य को नहीं छोड़ा। देश के कोने कोने में जाकर वे युवाओं, बच्चों को संबोधित करते रहे. उनके हर भाषण में युवामन के जिज्ञासु प्रवृत्तियों को भारत के ज्वलंत समस्याओं के समाधान खोजने हेतु अपना तन–मन समर्पित करने को प्रेरित करनेवाली बातें होती थी।

युवाओं की ऊर्जा में अटल विश्वास

डॉ. कलाम देश की समस्याओं से परिचित थे। इन समस्याओं की वजहें जानते थे। वे अपनी पुस्तक "तेजस्वी मन" में लिखते हैं, "हमारे पास श्रेष्ठता को हासिल करने की योग्यता है। हमारे पास विश्वास और ज्ञान का ऐसा अद्भुत मिश्रण है जो हमें इस पृथ्वी के अन्य देशों से अलग ला खड़ा करता है। मैं यह भी जानता हूँ कि इन अनूठी क्षमताओं का लाभ नहीं उठाया गया है क्योंकि हमें दूसरों की दास्यता स्वीकारने और शांत पड़े रहने की आदत सी पड़ चुकी है"। यही से कलाम को अपने जीवन का मंत्र मिला "लोगों को यह बताने से बेहतर बात और क्या होगी कि वे जो ख्वाब देखते हैं वे सच हो सकते है. यह कि उनके पास वह सबकुछ हो सकता है जो

अच्छे जीवन के लिए जरुरी है– स्वास्थ्य, शिक्षा, अपनी मंजिल तक पहुँचने के की आजादी और इन सबसे बढ़कर शांति"। हमसे कहाँ गलती हो रही है? वह क्या है जिसे ठीक करने की जरुरत है? यह कैसे हो सकता है? जैसे सवालों को युवाओं के बीच ले गए और अपने व देश के साझा स्वप्नों के लिए "आगे बढ़ो" का संदेश दिया! उनका मानना था कि रचनात्मक विचारों वाले युवा भारतीयों के विचार स्वीकृति की बाट जोहते–जोहते मुरझाने नहीं चाहिए। उन्हें उन नियमों से ऊपर उठाना ही होगा जो सुरक्षा के नाम पर उन्हें डरपोक बनाते हैं और व्यापार व्यवस्था, संगठनात्मक व्यवस्था तथा समूह व्यवहार की आड़ लेकर उन्हें उद्यम में जुटने से हतोत्साहित करते हैं। एक लकीर का फकीर न बनकर कलाम युवाओं से अपनी ऊर्जा के सर्वोच्च सदुपयोग हेतु कठोर परिश्रम की सभी सीमाओं को लांघने की बात किया करते थे। अपने कॉलेज के दिनों का एक वाकया सुनाते हुए कलाम कहते है कि जब सब कुछ दाँव पर लगा होता है तभी मानव मेधा प्रज्वलित हो उठती है और उसकी क्षमता कई गुना बढ़ जाती है। एक काम को चुन लेने के बाद व्यक्ति को उसमें डूब जाना चाहिए। आप चाहे सफल होंगे या असफल, यह जोखिम तो हमेशा रहेगा। लेकिन इस डर से आपको काम नहीं रोक देना चाहिए। यदि आप असफल भी होंगे तो भी भविष्य के लिए आपके पास अनुभव भी तो होगा। जन्म की प्रक्रिया ही अपने आप में जोखिम भरी है। लेकिन फिर भी नवजात साँस लेने लगता है और जीवन में आगे बढ़ता है अपनी तमाम उम्मीदों व अपेक्षाओं के साथ। अपने भीतर असफलता की चिंता छोड़ सफलता के विचार पैदा करें, सफलता आपके कदम चूमेगी।

> डा. कलाम अपनी पुस्तक "तेजस्वी मन" में लिखते हैं, "हमारे पास श्रेष्ठता को हासिल करने की योग्यता है। हमारे पास विश्वास और ज्ञान का ऐसा अद्भुत मिश्रण है जो हमें इस पृथ्वी के अन्य देशों से अलग ला खड़ा करता है।

डॉ. कलाम अपने अंतिम वर्षों में इस बात को लेकर बेहद चिंतनशील थे कि युवा मेधाओं को किस प्रकार प्रज्वलित किया जा सकता है? युवाओं को राष्ट्र–निर्माण की चुनौती से कैसे जोड़ा जा सकता है? उनका भरोसा था कि नए सिरे से जुटाई ताकत के साथ अपनाई गई समग्र परिकल्पना ही युवाशक्ति को देश की समस्त चुनौतियों के समाधान हेतु कार्य के लिए प्रेरित करेगी। वैसे समय में जबकि देश भ्रष्टाचार के आगोश में समाया दिखता है, सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता के प्रति बड़ा आग्रह था डॉ. कलाम का। वे कहते थे, हम सभी को, खासकर युवा पीढ़ी को, पारदर्शी भारत के निर्माण के लिए आन्दोलन करना चाहिए। पारदर्शिता कलाम की नजरों में विकास की सबसे मुख्य शर्त थी।

स्वप्न, केवल स्वप्न

डॉ. कलाम जिससे भी मिलते, जहाँ जाते, उनका एक विशेष आग्रह होता था, 'सपने देखो"। यह बात वे बड़े विश्वास के साथ कहते थे। उसके पीछे उनका तर्क होता था, "स्वप्न, स्वप्न और स्वप्न। स्वप्न ही विचार बनते है और विचार ही कर्म के रूप में हमारे सामने आते हैं। अगर स्वप्न ही नहीं होंगे तो क्रांतिकारी विचार भी जन्म नहीं लेंगे, और विचारों के न रहने से कोई कर्म भी सामने नहीं आएगा। हालांकि कभी–कभी कुछ असफलताएं आ सकती है, देरी हो सकती है, लेकिन स्वप्नों पर ही सफलता टिकी होती है"। अभिभावकों व अध्यापकों से वे हमेशा आग्रह करते थे कि वे बच्चों को स्वप्न देखने की इजाजत दें। उसे पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करे। बालमन ही नहीं युवा मष्तिष्क भी उनके दिखाए इस स्वप्नों की सीढ़ी चढ़कर न जाने कितने

कीर्तिमान गढ़ डाले। "अग्नि की उड़ान" पुस्तक कलाम के उन्हीं स्वप्नों के पूरा होने की कहानी ही तो है, जो रामेश्वरम के एक बेहद सुविधाविहीन परिवार में जन्मा लाल भी अपने पुरुषार्थ से एक दिन भारत की ध्वज पताका पूरे दुनिया में फहराने का सपना देखा करता था।

भविष्य का भारत कैसा हो, मानो अंतर्मन की बात युवाओं से कहते हुए "तेजस्वी मन" पुस्तक में ही कलाम लिखते हैं, भूमंडलीय व्यापार व्यवस्था, मंदी, मुद्रास्फीति, घुसपैठ, अस्थिरता जैसी तमाम समस्याओं से कहीं ज्यादा चिंता मुझे उस जड़ता की है जिसने राष्ट्रीय मानस को जकड़ा हुआ है। मै पराजय की मानसिकता को लेकर बहुत चिंतित हूँ। मेरा मानना है कि जब हमें अपने लक्ष्यों पर भरोसा होता है तब हम जो भी सपना देखते हैं, वह साकार हो सकता है। हमें अपने उच्च धरातल के प्रति जागरूक बनकर स्वयं को एक विकसित राष्ट्र के नागरिक के रूप में देखना चाहिए। हमारी महान सभ्यता रही है और यहाँ जन्में हममें से प्रत्येक को इस सभ्यता के ज्ञान पर भरोसा करना चाहिए। हमारे धर्मग्रन्थ बताते है कि हमारे और विश्व के अन्य देशों के बीच कोई अवरोध नहीं है। अब आपको खुद ही दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा।

2020 में विकसित भारत का स्वप्न देखने हेतु डॉ. कलाम युवाओं से इस स्वप्न को पूरा करने हेतु "मै क्या दे सकता हूँ" मुहीम चलाते रहे। अपने अपने सामर्थ्य का समुचित उपयोग बेहतर भारत के लिए करने की युवा ठान लें, उसके लिए अपने जीवन का छोटा अंश समर्पित करें, पूर्ण मनोभाव से देश के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे। ऐसा देश के युवा करेंगे तो भारत विश्व का सबसे सामर्थ्यशाली देश बन सकता है। उनका यह स्वप्न अभी अधूरा है। डॉ. कलाम इस दुनिया से रुखसत भले हो गए हो, उनके विचार, उनके सपने अभी भी जीवित हैं, वे हमारे लिए सदैव पथप्रदर्शक बने रहेंगे। कलाम दुबारा आने का वादा किए ढेर सारे स्वप्नों की पोटली सौंपकर हमारे बीच से सशरीर चले गए, यह कहकर, "हे ईश्वर! मुझे भारत का गौरवान्वित नागरिक होने के नाते इसकी धूल में मिल जाने देना ताकि मैं दोबारा जन्म लेकर इसकी यशोगाथा का आनंद ले सकूँ"। यह भागीरथी दायित्व हम सब पर है कि जब कलाम दुबारा आए तो पूरे विश्व में भारत का यशोगान सुनें, एक गौरवान्वित नागरिक होने की अनुभूति हो सके। इसके लिए और सपने देखने पड़ेंगे, और अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। यही अपने सच्चे मित्र कलाम के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का अगस्त 2015 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों तथा खबरों का संकलन किया गया है। आशा है यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई–मेल पर अवश्य भेजें।

"छात्रशक्ति भवन,"
26, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली – 110002
फोन : 011–23216298
ई–मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com
वेबसाईट : www.abvp.org

देश भर में उत्साह के साथ मनाया गया राष्ट्रीय छात्र दिवस

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 66वां स्थापना दिवस देशभर में उत्साह के साथ मनाया गया। राष्ट्रवादी विचारों के संवाहक संगठन अभाविप द्वारा 33 प्रांतों में भिन्न–भिन्न प्रकार के सांस्कृतिक व रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षार्थी एवं शिक्षाविदों के बीच राष्ट्रीय छात्र दिवस मनाया गया।

देशभर के महाविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नगर इकाई, महानगर इकाई द्वारा पौधरोपण, रक्तदान, पुस्तक वितरण, शोभायात्रा आदि कार्यक्रम किए गए। विद्यार्थी परिषद की स्थापना का उद्देश्य ही राष्ट्रीय पुनर्निर्माण पर केंद्रित है। छात्रहितों को सर्वोपरि रखकर दलगत राजनीति से परे हटकर राष्ट्र के निर्माण के विषय में चिंता करने वाले एकमात्र छात्र संगठन अभाविप 9 जुलाई 1949 को विधिवत रूप से पंजीकृत हुआ।

अवध प्रांत में अभाविप का 66वां स्थापना दिवस क्षेत्रीय संगठन मंत्री (उप्र व उत्तराखंड) श्री धर्मपाल की उपस्थिति में लखनऊ विश्वविद्यालय के सभागार में मनाया गया। इस अवसर पर संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। प्रांत के विभिन्न कालेजों, महाविद्यालयों व इंजीनियरिंग कालेजों में पौधरोपण किया गया। **काशी प्रांत** में राष्ट्रीय छात्र दिवस के मौके पर रक्तदान शिविर, पौधरोपण व संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि श्री मनोजकांत (अखिल भारतीय प्रकाशन एवं प्रशिक्षण प्रमुख) मौजूद थे। **ब्रज प्रांत** में रक्तदान शिविर का आयोजन, शोभायात्रा व बाइक रैली निकाली। **मेरठ प्रांत** में संगोष्ठी के आयोजन के बाद विशाल बाइक रैली का आयोजन किया गया। **गोरक्ष प्रांत** में शैक्षिक संस्थानों में नवान्तुक विद्यार्थियों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। स्वामी विवेकानंद के जीवन पर कार्यक्रम, विभिन्न स्थानों पर वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। **कानपुर प्रांत** में राष्ट्रीय छात्र दिवस पर कालेज कैम्पस में संगोष्ठी का आयोजन किया गया इसमें मुख्य वक्ता के रूप में कानपुर प्रांत के संगठन मंत्री श्री विजय प्रताप उपस्थित थे।

दिल्ली प्रांत में जिलाशः मैराथन दौड़ का सफल आयोजन किया गया। **जम्मू प्रांत** में कई कालेजों में विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। **पश्चिम बंग प्रांत** में राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री रघुनंदन के सानिध्य में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। **कर्नाटक प्रांत** में इस अवसर पर प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। **विदर्भ प्रांत** में प्रत्येक इकाई द्वारा पौधरोपण व संगोष्ठी का आयोजन किया गया। **मध्य भारत प्रांत** के इंदौर में क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री प्रफुल्ल आकांत की उपस्थिति में अभाविप के देशभक्ति जगाओ बैंड की प्रस्तुति छात्रों के बीच हुई। इसके अलावा ग्वालियर, भोपाल आदि महानगरों में भी संगोष्ठी, प्रतिभा सम्मान समारोह आदि कार्यक्रम हुए। ■

ब्रिक्स युवा सम्मेलन : नई उभरती विश्व व्यवस्था की दिशा में एक कदम

✍ सुमित कुमार मौर्य

ब्रिक्स (BRICS) पांच प्रमुख उभरती राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका का एक संघ है। ब्रिक्स में युवाओं की भूमिका को प्रोत्साहित करने और ब्रिक्स के लिए भविष्य की दशा और दिशा तथा कार्ययोजना तय करने के लिए पहला ब्रिक्स युवा शिखर सम्मेलन रूस के कजान शहर में 1 से 7 जुलाई 2015 के मध्य आयोजित किया गया। इस शिखर में पांच देशों से 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत की तरफ से 60 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल जिसमें भारत सरकार के 10 अधिकारी तथा देश के विभिन्न देशों से आने 50 युवा सम्मिलित थे। इस ब्रिक्स युवा शिखर सम्मेलन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 2 कार्यकर्ता श्री सुमित कुमार मौर्य और श्री अनिकेत दिवाकर काले संगठन के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अधिकतर युवा पहली बार रूस की यात्रा पर जाने को लेकर अत्यधिक उत्साहित थे। मास्को पहुंचने पर भोजन करने के पश्चात् भारतीय प्रतिनिधिमंडल शाम का मास्को शहर देखने निकला। मास्को की बड़ी इमारतों, स्वच्छ सड़कों, व्यवस्थित ट्रैफिक संचालन तथा अन्य चीजों ने भारतीय युवाओं को काफी प्रभावित किया यह अनुभव अत्यधिक सुखद था कि वहां महिलायें पूरी तरह स्वतंत्र तथा पुरुषों के समान ही सभी कार्यों में बराबर से प्रतिभाग ले रही थी।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल का रूसी विदेशी मामलों के मंत्री सरजेई लावरोव से भी मिलना हुआ. जिन्होंने BRICS युवा सम्मेलन के सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने रूस के इतिहास को अच्छी तरह से समझने के लिए रेड स्क्वायर (Red Square) और क्रेमलिन का भी दौरा किया। ब्रिक्स युवा शिखर सम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम कजान शहर में होने के कारण भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने रात्रि में कजान शहर के लिए ट्रेन पकड़ी।

अगले दिन प्रातः कजान रेलवे स्टेशन पहुंचने पर प्रतिनिधिमंडल का वहां के स्वयसेवकों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। साथ ही कजान रेलवे स्टेशन पर ही सर्वप्रथम अन्य देशों से आये हुए प्रतिनिधियों से भारतीय प्रतिनिधिमंडल का परिचय हुआ।

कजान शहर में University Village नामक स्थान पर सभी प्रतिनिधियों के रहने की व्यवस्था की गई थी। भोजन आदि के पश्चात् प्रतिनिधिमंडल ने Kazan में IT Park का दौरा किया। रूस आज प्रतिभागशाली IT युवाओं की ओर देख रहा है और वहां नयी Companies और अच्छा आधारभूत ढांचा खड़ा करना चाहता है।

कजान में 5 दिनों तक रहने के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने कजान विश्वविद्यालय तथा अन्य ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण किया तथा वहां की संस्कृति और सभ्यता को समझने का प्रयास किया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने Innopolis University

(इन्नोपोलिस विश्वविद्यालय) का भी दौरा किया जिसे देश की प्रथम Smart University कहा जाता है। यहां पर विश्वविद्यालय के डायरेक्टर्स ने विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों से इस विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए अपने देशों से छात्रों को भेजने का आग्रह भी किया। छात्रों से प्रश्न–उत्तर तथा सुझाव सत्र के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल के श्री अनिकेत काले को सर्वश्रेष्ठ प्रश्न पूछने के लिए पुरस्कृत भी किया गया।

कजान ने इस प्रथम BRICS युवा शिखर सम्मेलन के दौरान दो दिनों तक विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई तथा भविष्य की रणनीति तय करने पर विचार–विमर्श हुआ।

इस शिखर सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य यह था कि BRICS देशों के युवा एक आम सहमति पर पहुंच सके कि ब्रिक्स देशों को किन–किन क्षेत्रों में साथ–साथ कार्य करते हुए विकास और भयमुक्त वैश्विक व्यवस्था की ओर आगे बढ़ना है। इस शिखर सम्मेलन में पांचों देशों के युवाओं ने साथ–साथ कार्य करते हुए आने वाले BRICS सम्मेलन के लिए योजना तैयार की। ब्रिक्स देशों के लिए युवाओं के मंच से एक 'Action Plan' भी तैयार किया जिसे ध्यान में रखते हुए BRICS देश अपनी कार्यपद्धति को तय कर सके।

इस प्रथम ब्रिक्स युवा शिखर सम्मेलन में मुख्य रूप से पांच क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा हुई। और प्रत्येक क्षेत्र पर चर्चा के लिए सभी प्रतिभागियों को 5 गुटों में बांट दिया गया जो कि निम्न हैं,

1. आर्थिक सहयोग
2. राजनीतिक सहयोग
3. मानवीय सहयोग
4. मास–मीडिया सहयोग
5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग

भारतीय प्रतिनिधिमंडल की तरफ से अलग–अलग ग्रुपों में विभिन्न तरह के सुझाव तथा कार्य योजना प्रस्तुत की गई जिनमें कुछ निम्न है :–

1.BRICS Woman Enterpreneurship forum स्थापित करना और सर्वांगीण विकास के लिए इसे ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाना।

2. BRICS Youth Fund (ब्रिक्स युवा फंड) का निर्माण करना। जोकि New Devlopment Bank के fund में से ब्रिक्स देशों के युवा इन्टरप्राइजेज को वित्तीय सहायता दे।

3. BRICS Youth Council (ब्रिक्स यूथ काउंसिल) का निर्माण।

4. BRICS विश्वविद्यालय का निर्माण।

5. मानवाधिकारों को सम्मान और बढ़ावा देना।

6. आतंकवाद, मानव तस्करी, ड्रग तस्करी, साइबर सुरक्षा और समुद्री डकैती से लड़ने के लिए एक शक्तिशाली सैन्य व्यवस्था करना।

7. BRICS मीडिया फोरम का निर्माण।

8. Young Scientists Forum को प्रोत्साहित करना। युवा वैज्ञानिकों को BRICS देशों में रिसर्च लैब में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना।

9. ब्रिक्स देशों में एक–दूसरे की मेडिकल डिग्रियों को मान्यता देना।

10. ब्रिक्स देशों के युवा वैज्ञानिकों के मध्य संयुक्त रिसर्च और विकास प्रोग्राम को स्थापित करना।

इन सभी सुझावों के अलावा पांचों ग्रुपों में अन्य भी बहुत से सुझाव भारतीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा दिये गये।

इन सभी गुटों में दो दिनों के विचार विमर्श के पश्चात् एक अंतिम 'Action Plan' (एक्शन प्लान)

तैयार किया गया। जिस पर 6 जुलाई 2015 को पांचों देशों के अधिकारिक प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर करके इस पर अपनी सहमति दी। भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अधिकतर सुझावों को अंतिम एक्शन प्लान में सम्मिलित किया गया।

इस युवा शिखर सम्मेलन का एक प्रमुख पक्ष सांस्कृतिक आदान–प्रदान का भी रहा है। इतने दिनों तक साथ–साथ रहने के कारण सभी देशों के युवाओं को एक–दूसरे के देश के बारे में अच्छे से जानने, वहां की संस्कृति को समझने तथा उस देश के युवाओं की सोच को जानने का अवसर प्राप्त हुआ।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने विभिन्न क्रियाकलापों से अपने देश की संस्कृति, सभ्यता तथा अन्य के प्रति हमारे व्यवहार को दर्शाने का सफलतम प्रयास किया।

भारतीय युवा शक्ति ने वहां प्रदर्शनी लगाई जिसमें कि देश के विभिन्न धरोहरों जैसे – ताजमहल, दिल्ली का लालकिला, हैदराबाद की चारमीनार, जयपुर का हवा महल, कोणार्क का सूर्य मंदिर, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर और मुबंई का गेट वे आफ इंडिया के चित्र प्रमुख थे।

साथ ही भारत के शास्त्रीय नृत्य जैसे – भरतनाट्यम, कथ्थक, कुचीपुड़ी, मणिपुरी नृत्य, फोक नृत्य–भांगड़ा, बिहू और तमाशा आदि के चित्रों की भी प्रदर्शनी लगाई गई।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने Yoga कार्यक्रम का भी आयोजन किया जिसमें सभी देशों के प्रतिनिधियों ने योग का अभ्यास किया। भारतीय युवाओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जिनमे मणिपुर का शास्त्रीय नृत्य, राजकपूर के गानों पर नृत्य तथा 'जय हो' गाने पर भारतीय युवाओं द्वारा मनमोहक प्रदर्शन किया गया और पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

इस प्रकार इस शिखर सम्मेलन को हम देखें तो यह सम्मेलन जहां एक ओर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विद्यमान विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए रहा वहीं युवाओं को मंच प्रदान करने वाला रहा। एक–दूसरे देश के लोगों को जानने समझने तथा उनकी संस्कृति के आदान–प्रदान का मंच भी बना। ब्रिक्स देशों को इस मंच को आगे भी जारी रखते हुए इन देशों के युवाओं को विकास और शांतिपूर्ण वातावरण को बनाये रखने के लिए अपने मत और सुझाव तथा Action Plan तैयार करने का कार्य देते रहना चाहिए।

(लेखक जेएनयू, दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के शोधार्थी हैं और अभाविप दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष भी हैं।)

अभाविप का मोबाइल ऐप

डाउनलोड

करने की लिंक आपको

ABVP के

अधिकारिक अकाउंट

http://www.facebook.com/ABVPVOICE

https://twitter.com/abvpcentral

पर और वेबसाइट

www.abvp.org

पर भी उपलब्ध रहेगी।

एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान का दिल्ली में शुभारंभ

एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान का शुभारंभ करते राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीहरि बोरिकर। साथ में दिल्ली प्रदेश मंत्री साकेत बहुगुणा व अन्य

देश के छात्र अब एक एसएमएस भेजकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के सदस्य बन सकते हैं। एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान की औपचारिक शुरुआत 25 जुलाई को दिल्ली में हुई।

दिल्ली विश्वविद्यालय के नोर्थ कैम्पस स्थित कान्फ्रेंस सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री श्री श्रीहरि बोरीकर ने एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का सदस्य बनने के लिए छात्रों को एक फोरमेट के तहत जिला कोड, संस्थान कोड, ई–मेल आईडी आदि मोबाइल नं. 9223008844 पर भेजना होगा। जिला और संस्थान के कोड की सूची सदस्यता अभियान के कार्यकर्ताओं के पास उपलब्ध करा दी गई है। दिल्ली में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का सदस्यता अभियान 27 जुलाई से शुरु हुआ। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने पहली बार एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान की शुरुआत की। इसके साथ ही परम्परागत पर्ची पर आधारित सदस्यता अभियान भी चल रहा है।

मौके पर मौजूद दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के समूह से श्री श्रीहरि बोरीकर ने कहा, तकनीक हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। देश के युवाओं को एकजुट रखते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान चलाने की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि अभाविप प्रत्येक दिन के काम में तकनीक का इस्तेमाल करने में आगे रहने वाला संगठन है। यह पहला विद्यार्थी संगठन है जिसने एनरॉयड आधारित स्मार्ट फोन पर गत वर्ष ऐप लांच किया जो विद्यार्थियों में काफी लोकप्रिय हुआ।

एक संगठन के रूप में अभाविप के सदस्यों की संख्या प्रतिवर्ष तेजी से बढ़ रही है। 2013 में अभाविप के सदस्यों की संख्या 23 लाख थी जो 2014 में बढ़कर 33 लाख हो गई। हमें इस वर्ष सदस्यों की संख्या में और बढ़ोतरी की उम्मीद है। एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान द्वारा देश के छात्र आंदोलनों के इतिहास में अभाविप ने नई शुरुआत की है।

कार्यक्रम को अभाविप के दिल्ली प्रदेश मंत्री श्री साकेत बहुगुणा ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अभाविप विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है जो अपने सभी सदस्यों से तकनीक की सहायता से अखिल भारतीय स्तर पर कॉलेज, नगर, जिला और प्रांत इकाई के माध्यम से सम्पर्क में रहते हैं। आज हमने एसएमएस आधारित सदस्यता अभियान की शुरुआत की है। हम उम्मीद करते है कि छात्र–छात्राएं इसे वैसे ही हाथों–हाथ लेंगे जैसा कि पहले मिस्ड कॉल और हेल्पलाइन नंबर का डीयू में नामांकन के दौरान लिया था। उन्होंने छात्रों को याद दिलाते हुए कहा कि विद्यार्थी परिषद् पूरे वर्ष छात्रों से जुड़ी समस्याओं के लिए काम करने वाला संगठन है। सभी विद्यार्थियों से आग्रह है कि राष्ट्रवादी छात्र आंदोलन करने वाले संगठन अभाविप से जुड़े और छात्रों के अधिकार के लिए लड़ाई लड़े। ■

नेपाल : भूकम्प राहत कार्यानुभव

25–26 अप्रैल, 2015 को आए प्रलयकारी दैविक महाभूकम्प में नेपाल सहित पूरे विश्व को हिलाकर रख दिया। नेपाल भूकम्प का केन्द्र रहा। नेपाल में बड़ी तादात में जान–माल की क्षति हुई। हजारों लोगों की जानें गईं। सैकड़ों गांव खण्डहर में तब्दील हुए। हजारों लोगों की रोटी, कपड़ा एवं मकान की विकट समस्या खड़ी हुई। सैकड़ों लोग अब भी लापता हैं। हाहाकारी दृश्य मैंने खुद अपने आंखों से नेपाल में राहत कार्य के दौरान देखा है।

मुझे 27 अप्रैल को नेपाल में राहत कार्य में अपने कार्यक्षेत्र (वी. एन. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा) के कुछ कार्यकर्ताओं के साथ काठमांडो जाने का निर्देश दिया गया, परन्तु उस समय नेपाल के काठमांडो जाना कठिन लग रहा था। मेरे साथ मात्र तीन कार्यकर्ता नेपाल जाने के लिए तैयार हुए। उनको साथ में लेकर जोगवनी बोर्डर होते हुए बस द्वारा 27 अप्रैल को ही मैंने यात्रा प्रारंभ की। रास्ते में देखा कि नेपाल से आने वाली बसें पूरे यात्रियों से भरी हुई थी, परन्तु नेपाल जाने वाली बसें खाली थी। हम लोग जिस बस से यात्रा कर रहे थे उस बस में मात्र 10 लोग ही सवार थे। इन यात्रियों में से आधें लोग रास्ते में ही उतर गए। नेपाल जाने तक मात्र 5 यात्री बस में थे। उस समय स्थिति भयावह लग रही थी।

28 अप्रैल की संध्या 8 बजे हम नेपाल की राजधानी पहुंचे। काठमांडो का दृश्य देखकर डर लग रहा था, क्योकि वहां लगभग सभी घरों की रोशनी गायब थी। कफ़र्यू जैसा माहौल था। काठमांडो के एक कार्यकर्ता ने हम लोगों को संघ कार्यालय पहुंचाया। दूसरे दिन ही बिहार समेत कई अन्य प्रांत से कार्यकर्ता राहत कार्य के लिए काठमांडो पहुंचे। 29 अप्रैल को अलग–अलग समूह बनाकर राहत कार्य में जुट गए। पहले दिन हवाई अड्डे पर राहत कार्य हेतु गए। दूसरे ही दिन ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आम्बेकर के निर्देश पर टी. यू. शिक्षण अस्पताल (T. U. Teaching Hospital) गए। अस्पताल में स्थिति भयावह थी, माहौल काफी दर्दनाक था। हजारों लोग बुरी तरह से घायल थे। सैकड़ों लोगों के शव बेतरतीव तरीके से रखे हुए थे। हम सभी कार्यकर्ता अस्पताल के अलग–अलग विभागों में गट बनाकर सेवा कार्य में जुट गए थे। अस्पताल में सबसे भयावह दृश्य शव विभाग का था। परिजन झुण्ड बनाकर अपने स्वजन के शव के पास दहाड़ मार–मार कर रो रहे थे। इस कठिन परिस्थितियों में नेपाली सेना, प्रहरी वहां पर काम नहीं कर पा रहे थे। यहां का काम सबसे कठिन प्रतीत हो रहा था, दृश्य देखकर दिल दहल रहा था।

ईश्वर से शक्ति मांगकर अस्पताल के शव विभाग में कार्य प्रारंभ किया। हम लोग जहां काम (सेवा कार्य) कर रहे थे, वहां कार्य करना आसान बिल्कुल नहीं था। यहां राहत कार्य के लिए जो भी आता दृश्य देखकर काम करने का साहस नहीं जुटा पाता था और वापस चला जाता था। किंतु हमलोग कठिन से कठिन कार्य करने को संकल्पित थे। दिनभर सेना के साथ मिलकर शव को व्यवस्थित करना, उसकी पैकिंग कर परिजनों को देना, शव पर बर्फ डालना आदि कार्य करते रहे। पहले दिन के सेवा कार्य से प्रभावित होकर सेना एवं डाक्टर हम लोगों को धन्यवाद आदि कर रहे थे। दूसरे दिन के कार्य (सेवा कार्य) को देखकर सेना के एक अधिकारी ने कहा, "क्या आप भारतीय सेना से हो?" मैंने कहा, "नहीं,

(शेष पृष्ठ क्र. 18 पर...)

छात्र संघ के चुनाव की प्रासंगिकता और उपयोगिता

देश के कई विश्वविद्यालयों में छात्र संघ के चुनाव होते हैं। लेकिन अभी भी अधिकांश विश्वविद्यालयों में छात्र संघ के चुनावों पर रोक लगी है। 'शिक्षण संस्थानों में छात्र संघ के चुनाव की प्रासंगिकता और उसकी उपयोगिता' की बहस बहुत पुरानी है और आज भी इस पर बहस जारी है।

हमें गर्व है कि भारत को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त है लेकिन विश्वविद्यालयों में छात्र संघ चुनाव नहीं होने देने से लोकतंत्र की पहली सीढ़ी को ही बाधित किया जा रहा है। इसमें कोई दो मत नहीं कि छात्र संघ लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत करता है क्योंकि इससे युवाओं को राजनीतिक प्रशिक्षण सुनिश्चित होता है और नेतृत्व क्षमता विकसित होती है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश के करीब सात सौ विश्वविद्यालयों और पैंतीस हजार कॉलेजों में से 80 फीसद विश्वविद्यालयों में छात्र संघ नहीं है। अनेक राज्यों में छात्रसंघों के चुनाव प्रतिबंधित है। यह छात्रों के लोकतांत्रिक अधिकार पर हमला है। यह अपने आप में विरोधाभासी प्रतीत होता है कि एक तरफ तो आप 18 वर्ष की उम्र के छात्र–युवकों को जन–प्रतिनिधि चुनने हेतु वोट देने का अधिकार देते हैं और वहीं दूसरी ओर छात्र संघ चुनाव पर रोक लगा दी जाती हैं। यह कहां का न्याय है कि देश का छात्र संसद और लोकसभा के लिए जन–प्रतिनिधि चुन सकता है लेकिन अपने कॉलेज में छात्र–प्रतिनिधि नहीं चुन सकता।

छात्र संघ चुनाव के विरोध में सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से आरोप लगाए जाते हैं कि इसमें धनबल और बाहुबल का बोलबाला हो गया है तथा इससे पढ़ाई का माहौल दूषित होता है। यहां प्रश्न उठता है कि बिहार में लगभग पच्चीस वर्षों से छात्र संघ चुनाव नहीं हुए तो क्या यहां के परिसर हिंसामुक्त हो गए और दिल्ली विश्वविद्यालय जहां प्रतिवर्ष छात्र संघ चुनाव होते हैं, वहां की शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त हो गई?

सर्वोच्च न्यायालय ने छात्र संघ चुनाव में सुधार को लेकर लिंगदोह समिति का गठन किया था, जिसकी सिफारिशें छात्र संघ चुनाव के लिए

अनिवार्य हो गई है। इस समिति के मुताबिक एक प्रत्याशी केवल पांच हजार रुपए ही खर्च कर सकता है, वह दुबारा चुनाव नहीं लड़ सकता, उसकी उम्र 25 वर्ष तक होनी चाहिए, यदि शोध छात्र हों तो 28 वर्ष तक, मुद्रित पोस्टर पर रोक लगे, इत्यादि। ध्यान से देखें तो इस समिति की सिफारिशें व्यावहारिक नहीं लगती। जेएनयू एक कॉम्पैक्ट कैम्पस है इसलिए वहां पांच हजार रुपए में प्रचार हो सकता है लेकिन दिल्ली विश्वविद्यालय, जिसके छात्र संघ से संबंधित 50 कॉलेज दिल्ली भर में फैले हैं, क्या महज पांच हजार रुपए में सप्ताह भर में प्रचार हो सकते हैं?

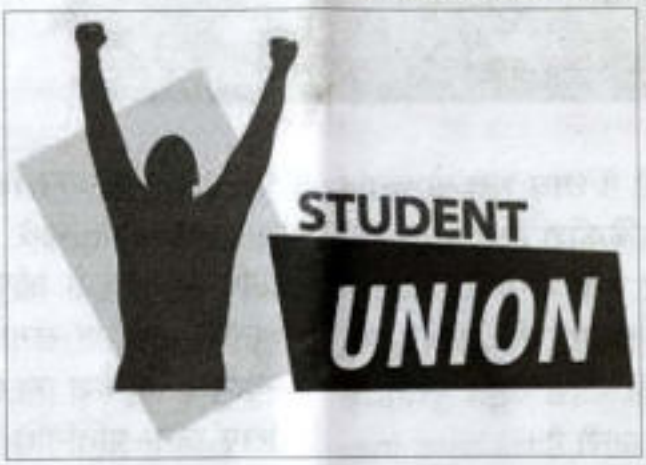

भारत में छात्र आंदोलनों का एक गौरवमयी इतिहास है। छात्रों ने हमेशा समाज–परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गौरतलब है कि स्वतंत्रता आन्दोलन में छात्रों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। महात्मा गांधी के आह्वान पर लाखों छात्रों ने अपने कैरियर को दांव पर लगाते हुए स्कूल और कॉलेजों का बहिष्कार किया। वर्ष 1973 में गुजरात विश्वविद्यालय में मेस खर्च की राशि बढ़ाए जाने के विरोध में छात्र आंदोलन हुआ और अगले साल 1974 में बिहार में शुल्क वृद्धि के खिलाफ छात्रों ने आंदोलन प्रारंभ किया। बाद में यह राष्ट्रीयव्यापी आंदोलन हो गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा देश पर थोपे गए आपातकाल को इसी आंदोलन के बूते चुनौती दी गई और व्यवस्था परिवर्तन साकार हुआ। केन्द्र में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार बनी।

गौरतलब है कि छात्र संघ से निकले अनेक नेता राष्ट्रीय राजनीति की मुख्यधारा में अन्य की अपेक्षा अच्छी भूमिका निभा रहे हैं–अरुण जेटली, नितीश कुमार, सीताराम येचुरी, अजय माकन आदि। असम में छात्र आंदोलन से निकले लोगों ने ही सरकार चलाई। छात्र नेता प्रफुल्ल महंत मुख्यमंत्री बने। नब्बे के दशक के प्रारंभ में मंडल आयोग की सिफारिशों के विरोध में छात्रों ने आरक्षण विरोधी आंदोलन को परवान चढ़ाया। लेकिन कैम्पसों में सक्रिय अभाविप जैसे देश के प्रमुख छात्र संगठनों ने आरक्षण का समर्थन कर देश को झुलसने से बचा लिया। सन् 1988 में बोफोर्स कांड को लेकर भ्रष्टाचार के विरोध में देश भर में छात्र संगठनों द्वारा संघर्ष चलाया गया। इस सदी के प्रारंभ में सन् 2002 में शिक्षा और रोजगार के सवाल को लेकर विद्यार्थी परिषद् के बैनर तले 75,000 छात्रों ने संसद के सामने दस्तक दी।

आज जब समाज–जीवन और राष्ट्रीय राजनीति में भी विकृतियां दिखाई दे रही है तो उसका प्रतिबिम्ब छात्र राजनीति पर भी पड़ना स्वाभाविक है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि कई शिक्षण संस्थानों में छात्र संघ चुनाव में अपराधीकरण की प्रवृति व्याप्त है। यह सचमुच चिंता का विषय है लेकिन रोग को दूर करने के बजाए रोगी को मारना, यह कैसा न्याय है? यहां सवाल उठता है कि क्या लोकसभा और विधानसभा चुनाव में हिंसा नहीं होती? तो फिर छात्र संघ चुनाव पर ही क्यों रोक लगाए जाते हैं?

(साभार-प्रवक्ता.काम)

मामला बेजा विरोध का...

✍ अक्षय दुबे 'साथी'

सच ही कहा गया है कि सत्कर्मों की साधना का मार्ग मुश्किलों से भरा होता है। अच्छी नियत और नीतियों के साथ कार्य करने वालों के दुश्मन भी बहुतेरे चाल चल कर बेमतलब हमला करने के लिए सदैव उतारू रहते हैं, जो नेक राह पर रोड़े लगाकर तरक्की का मार्ग अवरुद्ध करने का दुस्साहस करते ही रहते हैं। शायद यही वजह है कि एक सच्चे राष्ट्रवादी सरकार के आने के बाद अपनी जमीन खिसकती देख एक 'विशेष विचारधारा' वाले वर्ग तिलमिलाए हुए हैं। उनकी स्थिति 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' जैसी हो गई है। तभी तो सुनियोजित ढंग से अनर्गल प्रलाप करते हुए विरोध की चिंदी फहरा रहे हैं, ताकि जनता का ध्यान सुकृत्यों से हटाकर बेवजह विरोध के दलदल में फसाया जा सके।

कुछ ऐसा ही दलदल तैयार किया गया है, 'भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान' (एफटीआईआई) पुणे में। राष्ट्रीय महत्व प्राप्त इस संस्थान में अध्यक्ष पद के लिए वरिष्ठ टीवी और फिल्म अभिनेता गजेन्द्र चौहान की नियुक्ति हुई और उनके अध्यक्ष बनते ही एकाएक विरोधों के स्वर फूटने लगे। सबसे अजीब बात तो ये है कि विरोध का कारण ही फिजूल है। वहां के कुछ छात्र इसे महत्वपूर्ण मानते हैं। एफटीआईआई के छात्र संगठन के अध्यक्ष हरिशंकर नचिमुथु मीडिया को बयान देते हुए कहते हैं कि यहां मुद्दा क्षमताओं का है। इसका मतलब है कि वरिष्ठ फिल्म अभिनेता चौहान क्षमताहीन हैं। कितनी दूरदर्शी वे और उनकी सोच, उनके प्रशासनिक कार्य को देखे बगैर ही उनकी क्षमताओं का आंकलन कर लिए.. हो सकता है कि एफटीआईआई के छात्र संगठन के अध्यक्ष के द्वारा संस्थान के नवनियुक्त चेयरमैन के फिल्म और टीवी से जुड़े अनुभव के आधार पर ये कयास लगाया गया हो कि ये क्षमताहीन हैं। फिर भी ये बात गले नहीं उतरती जिन्हें एक लम्बे समय तक का फिल्म का अनुभव हो, जिनके पास टेलिविजन सीरियल का तजुर्बा हो, जिन्होंने महाभारत में युधिष्ठिर का किरदार निभाकर उसे जीवंत कर दिया हो वे क्षमता हीन कैसे हो सकते हैं?

बिलकुल वे क्षमताहीन हो सकते हैं क्योंकि तथाकथित छात्र चाहते हैं कि इस संस्थान का नेतृत्व कोई दिग्गज करे। गजेन्द्र चौहान कोई बड़ा ग्लैमर नहीं है... छात्र और उनके समर्थकों की टोलियों की राय में ये नियुक्ति सरकार की बहुत बड़ी गलती है। ऐसा भ्रम फैलाने की भरसक कोशिश की जा रही है। उन छात्रों से मेरा एक सवाल है कि दिग्गज होने का पैमाना क्या है? क्या किसी विशेष रंग में रंग जाना, बड़ा ग्लैमर से उनका मतलब कोई बड़ा खानदान या विचारधारात्मक ग्लैमर से तो नहीं है? ऐसे में तथा कथित आम अवाम की पैरवी करने वाले इन झंडाबरदारों को अपने कृत्यों पर पछतावा होना चाहिए और सरकार का शुक्रगुजार कि उन्होंने उन जटिल परम्पराओं को तोड़ा है जहाँ कोई बड़ा ग्लैमर

वाला व्यक्ति ही किसी महत्वपूर्ण पद पर पहुंच सकता था।

खैर सवाल यहां ग्लैमर का नहीं अपितु सरकार को योजनाबद्ध रूप से कोसने की अराजक प्रवृत्तियों का है। इन प्रवृत्तियों के द्वारा सबसे प्रभावशाली और सॉफ्ट कार्नर के रूप में विद्यार्थियों को निशाना बनाया जाता है और उनके महत्त्वपूर्ण समय और उत्पादकता को नष्ट कर भ्रष्ट बनाने की कारगुजारियां की जाती है। अगर ये आन्दोलनकारी इतने ही संजीदे हैं तो वर्षों से बंद दीक्षांत समारोह और बंद पड़े भर्ती की प्रक्रिया के विरुद्ध क्यों लामबंद नहीं हुए? पूर्ववर्ती सरकारों के खिलाफ इनके मुंह पर ताले क्यों जकड़े हुए थे? क्या उनको चुप रहने के एवज में पद, प्रतिष्ठा और पैसा मिलता था? शायद यही वजह है कि इनको अब परम्पराओं का पालन होता दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि उस भ्रष्ट परंपरा में इनकी तूती बोलती थी जो अब बंद हो रही है।

एक बात और...। जब राजीव गांधी बिना किसी पूर्व राजनीतिक अनुभव के प्रधानमंत्री बनकर देश चला सकते हैं, बिना क्रिकेट खेले शरद पवार से लेकर अनुराग ठाकुर बीसीसीआई को संभाल सकते हैं, अचानक गृहणी से राबड़ी देवी बिहार की मुख्यमंत्री हो सकती हैं तो गजेंद्र चौहान एफटीआईआई क्यों नहीं चला पाएंगे? माना क्रिएटिव फील्ड है लेकिन क्रिएटिविटी किसी की बपौती है क्या? ये कैसे मान लिया जाए कि क्रिएटिविटी में गजेंद्र चौहान, अमिताभ बच्चन, हेमा मालिनी या कोई और से कमतर हैं? कम से कम उन्हें काम करके खुद को साबित करने का मौका तो दिया जाना चाहिए।

इस पूरे प्रकरण में मैं विरोध के उस छद्म रूप को दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ जिसे एक सोची समझी रणनीति के तहत अंजाम दिया जा रहा है इसलिए एफटीआईआई से लेकर जेएनयू तक शोरशराबा पसर रहा है। इस विरोध के खिलाफ होने का मतलब कदाचित ये नहीं है कि मैं उस विसम्मति के विरुद्ध हूं जो हमारे लोकतंत्र की आत्मा है। असहमति को उचित स्थान मिले लेकिन जो बौद्धिक जुगाली एफटीआईआई के परिप्रेक्ष्य में की जा रही है, वह विसम्मति का मामला नहीं बल्कि कुसम्मति का मामला है। यदि गजेन्द्र चौहान निर्धारित अहर्ताएं पूरी नहीं करते, वह दागी या भ्रष्ट होते या फिर पदग्रहण करने के पश्चात ऐसा कोई कार्य करते जो संस्थान की गरिमा के विपरीत होता तब ये विरोध जायज होता अभी तो ये केवल बेजा विरोध का मामला है... ।

■

(पृष्ठ क्र. 14 से...)

हम लोग अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ता है।" कुछ ही देर में सेना के दूसरे अधिकारी के साथ डाक्टर मेरे पास आए और उन्होंने कहा कि आप भारत वापस मत जाना। आपको मैं अस्पताल में ही नौकरी दूँगा। लेकिन मैंने यह कह कर मना कर दिया कि यहां पर हम लोग सेवा कार्य के लिए आए हैं। लगातार कई दिनों तक मैं यहां राहत कार्य करता रहा। एक–एक परिवार के पांच–पांच शव भी कई परिवारों के मिले थे। शव खराब हो रहे थे, काफी दुर्गंध फैल रहा था। हॉल के साथ सैकड़ों शव फ्रिज में भी रखे हुए थे। ऐसी कठिन परिस्थिति में मैं यहां काम कर पाया, मुझे लगता है कि ईश्वर द्वारा दी गई शक्ति के कारण ही यह संभव हो पाया। इस काम में मेरे साथ भूपेन्द्र खाती– उत्तरांचल, वीरभद्र, अमित, महेश– बेंगलुरू, अनिस सिंह, सचिन– कटिहार, लक्ष्मण आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। नेपाल से लौटते वक्त नेपाली प्रहरी के प्रहरी निरीक्षक द्वारा मुझे प्रशंसनीय पत्र भी मिला।

(सुग्रीव कुमार– लेखक बिहार प्रान्त के सह संगठन मंत्री हैं।)

■

अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन प्रकल्प (SEIL) के पचास साल

राष्ट्रीय एकात्मता का अनूठा प्रयास

✍ अतुल कुलकर्णी

मुबंई हो या गुवाहाटी अपना देश अपनी माटी।
अमृतसर हो या इटानगर अपना देश अपना घर।

लगभग पचास साल पूर्व जब मुंबई में ऐसे नारें लोगों ने सुने तब उन्हें शायद ही इसका अर्थ ध्यान में आया होगा। लेकिन आज पचास साल बाद उन्हीं नारे देने वाले कार्यकर्ताओं में से एक श्री पद्मनाभ आचार्य जब हाल ही पूर्वोत्तर का एक अहम राज्य नागालैण्ड के राज्यपाल बने तब उनके शपथ ग्रहण समारोह के पश्चात् स्थानीय जनता का उत्साह और आनंद पांच दशकों के अथक प्रयासों के महत्व को और भी अधोरेखित करता है।

मुंबई स्थित महाविद्यालय में पढ़ाई करते हुए अपने एक मित्र श्री अरूण साठे उस समय असम प्रांत में रा. स्व. संघ के प्रचारक थे उन्हें मिलने हेतू श्री पद्मनाभ आचार्य और श्री दिलीप परांजपे पूर्वोत्तर के राज्यों में गए थे। वह साल था 1951 अपने प्रवास के दरम्यान स्थिति का जो अध्ययन हुआ, जानकारी के अभाव से उत्पन्न हुए कई गलतफहमियों को अगर दूर करना है तो पूर्वोत्तर के छात्रों को एक जीवनभर आनंद देने वाला अनुभव मिले ऐसे किसी कार्यक्रम का विचार करते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के माध्यम से 'आंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन' (Students' Experience in Inter State Living- SEIL) प्रकल्प की शुरूआत हुई। लगातार प्रवास के बाद नेफा (वर्तमान में अरूणांचल प्रदेश) प्रांत के अभिभावकों का विश्वास प्राप्त करते हुए कुछ स्कूली छात्र 31 मई 1966 को मुंबई पहुंचे। मुंबई महानगर के प्रथम नागरिक 'महापौर' के उपस्थिति में एक भव्य स्वागत समारोह के बाद सभी विद्यार्थी अपने अपने यजमान परिवारों के साथ रहने गए। आज तक सील प्रकल्प के अंतर्गत परिवारों के साथ रहने की यह परंपरा कायम

है और देश के अन्य प्रांतों से पूर्वात्तर में जाने वाले छात्रों को भी अत्यंत हृदय अनुभव प्राप्त होता है।

छह पड़ोसी देशों से लगी हुई आंतरराष्ट्रीय सीमाओं में बसा हुआ आठ राज्यों का प्रदेश पूर्वोत्तर के नाम से पहचाना जाता है। कुल मिलाकर 166 प्रमुख जनजाति यहां बसी हुई है। अपने देश का 7 फीसद भूप्रदेश तेल, नैसर्गिक संसाधन, खनिज आदि से भरपूर यह प्रदेश देश के अन्य प्रांतों से 32 कि. मी. लंबी 'चिकनचेक' के द्वारा जुड़ा हुआ है।

सूदूर होने के कारण मूलभूत सुविधाओं का अभाव, उद्योग जगत के लिए आवश्यक शांति एवं सुव्यवस्था की कमी इसके कारण यह प्रदेश अविकसित रहा है। परिणामस्वरूप अलगाववादी गुटों के लिए हमेशा यहां पनपने का मौका मिला है।

'एक राष्ट्र–एक जन–एक संस्कृति' इस बोधवाक्य को अपनाने हुए सील प्रकल्प के माध्यम से अनुभव के आधार पर भावनिक एकात्मता का प्रयास करने वाला अपने देश का एकमात्र और विशिष्ट प्रयोग है। संस्करक्षम आयु में (14–20 साल) देश की एकात्मता

के बारे में विश्वास दृढ़ करने वाले अनेक अनुभव सहभागी छात्रों ने लिए है।

प्रकल्प के शुरूआती सालों में पूर्वोत्तर के अनेक छात्रों ने मुंबई सहित अनेक शहरों में परिवारों के साथ रहते हुए अपनी शिक्षा पूरी की। इन्ही में से एक अरूणांचल प्रदेश के चीन से आये हुए सीमावर्ती गांव से रहने वाले लेकी फुंगसो विख्यात मराठी संगीतकार–गायक श्री सुधीर फडके के घर रहे। अरूणांचल प्रदेश सरकार में उच्च अधिकारी के पद से श्री लेकी फुंगसो हाल ही में निवृत्त हुए। इम्फाल जिला न्यायलय की निवृत्त न्यायधीश सुश्री सुरबान देवी, अरूणांचल प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री गेगांग अपांग जैसे कई सील प्रतिभागी छात्र पूर्वोत्तर के समाजजीवन में प्रमुख भूमिका अदा कर रहे है।

मुंबई के कार्यक्रम में सील (SEIL) प्रतिभागियों के साथ मराठी अभिनेता श्री सचिन खेड़ेकर तथा दिग्दर्शक श्री आशुतोष गोवारिकर

पिछले पचास सालों में अनेक छात्र पूर्वोत्तर में भ्रमण करने गए तथा वहां से कई छात्र देश के अन्य प्रांतों में घूमने आये है। मणिपुर की नशीली पदार्थों के कारण समस्या, त्रिपुरा से जुड़ा चकमा शरणार्थिओं का प्रश्न हो या असम और पश्चिम बंगाल में हो रही घुसपैठ ऐसे अनेक विषयों के बारे में प्रत्यक्षदर्शी अध्ययन भी हुआ। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री पी. ए. संगमा कई राज्यों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री, शास्त्रज्ञ, विश्वविद्यालयों के कुलपति और खिलाड़ी तथा फिल्म जगत की हस्तियों ने प्रकल्प की सराहना की है।

अनेक वर्षों की मेहनत के बाद समस्याओं का कुछ आकलन हुआ और एक स्थायी समाधान खोजने के प्रयास शुरू हुए। साल 2000 में सील अंतर्गत गुवाहाटी में 'युवा विकास केन्द्र' की शुरुआत हुई। विकास प्रक्रिया की गति और इसमें स्थानीय युवाओं की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु कार्यरत इस केन्द्र में पिछले एक दशक में विविध उपक्रमों का आयोजन हुआ है। स्कूल/महाविद्यालय शिक्षा अधूरी छोड़कर निकलने वाले युवक प्रशिक्षित होकर नौकरी तथा व्यवसाय करने योग्य बनाने हेतु कई प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षणात्मक कार्यक्रम 'युवा विकास केन्द्र' द्वारा आयोजित होते है। पूर्वोत्तर क्षेत्र की समस्याओं पर चर्चा, संगणक प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास शिविर जैसे अनेक कार्यक्रम नियमित रूप से होते है।

अनेक साल चल रहे इस प्रकल्प की भावना तथा संकल्पना यजमान परिवारों के अगली पीढ़ी में संक्रमित होने के कई उदाहरण है। अपने पैतृक घर से कई कोसों दूर एक और घर होने का अनुभव असम के सुनील बसुमतारी, चीनी के बोरो अरूणांचल प्रदेश से तान काया काटा और मणिपुर की इडलिना तथा जॉयसिंग जैसे अनेक युवकों के आयुष्य की दिशा बदलने के कारण बने हैं।

गत पचास वर्षों की तपस्या पूर्वोत्तर में राष्ट्रवादी विचार रखनेवाले युवकों के लिए एक प्रेरणादायी दीपस्तंभ के रूप में मार्गदर्शक बनी है। ■

साक्षात्कार

'अभाविप में निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा है जनजाति छात्र...'

प्रफुल्ल आकांत

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की स्थापना 9 जुलाई 1949 को हुई। अभाविप अपने स्थापना काल से ही छात्रों में राष्ट्रभक्ति की भावना पैदा करके देश की समस्याओं के समाधान के लिये उन्हें अपनी ऊर्जा और क्षमता का उपयोग करना सीखाती है। स्थापना काल से ही जनजाति छात्रों की समस्याएं, स्थिति पर अभाविप का ध्यान रहा है। गत कई वर्षों में ठोस कार्य करते हुए अभाविप ने कई उपलब्धियां भी हासिल की है। बीते दो दशकों में जनजाति क्षेत्र में अभाविप के कार्य का विस्तार हुआ है और उस हेतु एक व्यापक नीति भी बनी है। जनजाति कार्य के अखिल भारतीय प्रमुख तथा मध्य क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री **प्रफुल्ल आकांत** से **दीपक बरनवाल** की बातचीत के कुछ अंश –

प्र. जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिये अलग से अभाविप कब से काम कर रही है ?

उ. वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में अभाविप का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशन के ठीक एक दिन पहले एक दिवसीय अखिल भारतीय जनजाति सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा का प्रसार, वहां की समस्या, वहां की लोक संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण संबंधी प्रस्ताव पारित हुए। उसके बाद से अभाविप जनजाति क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर अलग से काम कर रही है।

प्र. छात्र संगठन होने के नाते अभाविप जनजाति क्षेत्रों में केवल विद्यार्थियों के लिये ही काम कर रही है या उस क्षेत्र की समस्याओं के लिये भी काम करती है ?

उ. विद्यार्थी परिषद कोई ट्रेड यूनियन नहीं है। यह एक देशभक्त छात्र संगठन है जो ज्ञान और आचरण के बल पर एकता की बात करता है। संगठन काम तो जनजाति क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं के बीच ही करता है। वहां के विद्यर्थियों में शिक्षा व तकनीक का प्रसार और मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास निरंतर चलता है। उन्हीं के माध्यम से क्षेत्र की समस्याओं के निदान का प्रयास भी हो रहा है। समय–समय पर व्यक्तित्व के विकास पर शिविर, कम्यूनिकेशन स्किल प्रशिक्षण, मुफ्त कोचिंग क्लासेस, स्वास्थ्य कैंप, स्थानीय स्तर के खेलों के आयोजन के माध्यम से धीरे–धीरे बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है जो कुछ हद तक फलीभूत होते दिख भी रहा है। जनजाति छात्र जो पढ़ना चाहते हैं, उन्हें मदद करने के लिये अभाविप 'अनुभव –Career for Nation' के नाम से पहल कर रही है।

प्र. जनजाति क्षेत्रों में अलग से काम करने की जरूरत क्या है ? लोग इसको मुख्यधारा से अलग रखने की साजिश के तहत देखते है ?

उ. जनजाति समुदाय के लोग अपने हैं, वे अपने से कभी अलग नहीं थे। इतिहास इसका गवाह है। अकबर के साथ लड़ाई में महाराणा प्रताप का साथ देने वाले भील, जिंदापीर के नाम से कुख्यात औरंगजेब के विरूद्ध वीर शिवाजी का साथ देने वाले मावले, 1857 में अंग्रेजों से लड़ाई में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का साथ देने वाली झलकारी देवी

जनजाति समुदाय से ही तो थे। अंग्रेजों ने एक साजिश के तहत इस समाज को अज्ञानी के रूप में सबके सामने घोषित किया और हमलोग उस साजिश के शिकार हुए। इस तरह से ये समुदाय मुख्यधारा से अलग हो गया जिसे फिर से एकजुट करने की आवश्कता है। अभाविप मानती है कि जनजाति समुदाय साक्षर हो न हो अज्ञानी नहीं हो सकता। जनजाति समुदाय में दोहन की परम्परा है, शोषण की नहीं। ऐसे में, ये समुदाय अज्ञानी तो कतई नहीं हो सकते।

प्र. एसटी (ST) विद्यार्थियों के लिये अभाविप की योजनाएं क्या है ?

उ. हिन्दुस्तान में पंजाब और हरियाणा दो राज्यों को छोड़कर सभी राज्यों में जनजाति आबादी है। देश में 117 जिले ऐसे हैं जहां 50 फीसद जनजाति समुदाय रहते हैं। आजादी के बाद से शासन की नीति में कुछ ऐसी कमियां रहीं जिसके कारण आज भी उन तक सुविधा नहीं पहुंचीं।

विद्यार्थी परिषद का मत है कि

– छात्रों की छात्रवृत्ति मूल्य सूचकांक **(Price Index)** के आधार पर तय होना चाहिए जैसे कर्मचारियों के वेतन होते हैं।

– जनजाति क्षेत्र में वनुपयोगी आधारित उद्योग की स्थापना होनी चाहिए ताकि वहां के युवाओं को आसानी से रोजगार उपलब्ध हो।

– केन्द्र सरकार की मेड इन इंडिया व स्किल इंडिया योजना में जनजातियों के स्किल और उनके हर्बल ज्ञान का उपयोग होना चाहिए।

प्र. एसटी (ST) विद्यार्थियों के बीच काम करने वाले कार्यकर्ता शहरी हैं या वहां के स्थानीय ?

उ. इस समुदाय के साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं में शहरी भी हैं और समुदाय से जुड़े लोग भी। स्कूल–कालेजों में गर्मी की छुट्टियों में शहरी कार्यकर्ताओं के लिये अभाविप संवेदना चल शिविर का आयोजन करती है। इसमें जनजाति क्षेत्र के गांव–गांव पैदल घूमते हैं, और वहां की समस्याओं से सामान्य कार्यकर्ताओं को अवगत कराते हैं। ठीक वैसे ही समय–समय पर जनजाति विद्यर्थियों को भी एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में परिचय कराते हैं। उनमें निर्णय लेने की समझ बनाने के लिए उन्हें संगठन से जोड़ने, उनको निर्णय लेने की स्थिति में लाने का प्रयास हो रहा है। कई राज्यों के अभाविप के नगर इकाई से लेकर प्रदेश इकाई तक में निर्णय में भूमिका जनजाति समुदाय से आये प्रतिनिधियों की रहती है।

प्र. जनजाति की परम्पराओं का भविष्य क्या है?

उ. अभाविप मानती है कि जनजाति समुदाय की परम्परा ही देश और विश्व का भविष्य है। क्योंकि इनकी परम्परा हमें शोषण से दोहन, उपयोग से सदुपयोग की ओर ले जाती है। उदाहरण के लिये जनजाति समुदाय के लोग खाने के लिये पेड़ के पत्तों से बने पत्तल में खाना खाते हैं। इसके उपयोग से बर्तन धोने की जरूरत नहीं तथा पानी, समय और डिटर्जेंट की बचत। पत्ते के लिये पेड़ और जंगल का संरक्षण जरूरी। आज की सोच यूज एंड थ्रो जैसा ही है लेकिन कुछ बारीक सा आधारभूत अंतर है। शहरों में यूज एंड थ्रो के लिये कागज, गत्ते, थर्मोकोल या अन्य चीजों से बने पत्तल का इस्तेमाल करते हैं जो फेंकने पर कूड़ा–कचरा बनता है जबकि पत्ते से बना पत्तल जैविक खाद में तब्दिल हो जाता है और भूमि को ऊपजाऊ बनाता है। जनजाति समुदाय में संग्रह की प्रवृति नहीं है, इसके बाद भी हमने इस समुदाय के किसी व्यक्ति को भीख मांगते नहीं देखा।

प्र. जनजाति क्षेत्रों में काम करने की अब तक की अभाविप की उपलब्धि क्या है ?

उ. वर्ष 2004 में, 'छात्र वणवा' नाम से महाराष्ट्र में जनजाति समुदाय के विद्यार्थियों के साथ मिलकर बड़ा प्रदर्शन किया गया। उसके बाद वहां की सरकार ने एसटी छात्रावासों की स्थिति में सुधार के लिये 120 करोड़ का अनुदान दिया। 2013 में

कर्नाटक में विद्यार्थियों के छात्रावासों की समस्या को लेकर एक सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में तत्कालिन शिक्षा मंत्री आये और लगभग दो हजार करोड़ रुपये देने की घोषणा की। घोषणा भाजपा सरकार ने की थी। चुनाव बाद सत्ता परिवर्तन हुआ, इसके बाद भी प्रदेश सरकार ने घोषणा के अनुरूप राशि वितरित की।

अभाविप मानती है कि छात्रावास केवल रहने और खाने का केंद्र नहीं तो छात्रों के सर्वांगीण विकास का केंद्र है। इसलिये यहां रहने व खाने के साथ पुस्तकालय, इंटरनेट, व्यायामशाला से लेकर इंडोर गेम्स की सुविधाएं भी होनी चाहिए। एसटी छात्रावासों की स्थिति को लेकर 2008 में एक सर्वेक्षण किया गया और उसके आधार पर एक जनहित याचिका उच्चतम न्यायालय में दी गई। इस याचिका पर इसी साल कोर्ट ने केंद्र से लेकर राज्य सरकारों को छात्रावासों की स्थिति पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है।

प्र. शहरी समाज की समस्याओं से जनजाति समुदाय की समस्याएं कितनी अलग है ?

उ. सामाजिक समस्या तो प्रत्येक समुदाय में है लेकिन शहरी समाज में जिस तरह दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, परिवार में महिलाओं का दोयम दर्जा होने जैसी समस्या नहीं है। जनजाति समुदाय में महिलाओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। घर से लेकर बाहर तक, रोजगार से लेकर उनके व्यवसाय तक सबमें महिलाओं की भूमिका पुरुषों के बराबर की है। विवाह में इस समुदाय की महिलाओं की सहमति का होना बहुत जरूरी है। इसमें दहेज जैसी कोई बात नहीं है, क्योंकि यहां के लोगों का मानना है कि विवाह के बाद परिवार में एक पेट का बढ़ना नहीं बल्कि काम करने वाले दो हाथ का जुड़ना है। जनजाति समुदाय अक्षय तृतिया को आम पूजा करते हैं, उसके बाद ही आम के फल को खाते हैं। उनका मानना है कि अक्षय तृतिया से पहले–पहले आम के फल में बीज नहीं होता। काफी हद तक सच्चाई भी है कि अक्षय तृतिया आते–आते आम के फल में बीज बनने लगता है। जो समाज आम की अगली पीढ़ी के आने की चिंता करते हुए, फल में बीज बनने का इंतजार करते हों, उस समाज में कन्या भ्रूण हत्या जैसी सोच तो दूर–दूर तक नहीं है। यह तो एक बानगी भर है। ऐसी सोच को अन्य समाज के साथ ज्यादा से ज्यादा बांटने की जरूरत है।

प्र. जनजाति क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या नक्सलवाद है, इसको विद्यार्थी परिषद किस प्रकार से देखती है ?

उ. विद्यार्थी परिषद मानती है कि जनजाति क्षेत्र में नक्सलवाद बड़ी समस्या है। संगठन का मानना है कि इस समस्या के पनपने का कारण क्षेत्र का पिछड़ा होने से ज्यादा समस्या बाहरी और देश विरोधी तत्वों द्वारा लाई गई है। क्या किसी ने भी सुना क्या कि नक्सलियों ने क्षेत्र के विकास के लिये स्कूल खोले, अस्पताल खोले, पेयजल संकट दूर करने के लिये नलकूप लगवाये या जल मीनार बनवाये। जनजाति क्षेत्र के पिछड़ापन इसके जड़मूल में होता तो ये विकास विरोधी नहीं होते। स्कूल व अस्पतालों के भवनों को बम विस्फोट से उड़ाया नहीं जाता। देश में एक साजिश के तहत जनजाति क्षेत्र और समुदाय को अलग–थलग रखने का प्रयास अंग्रेजों के शासन से चल रहा है जो बदस्तूर जारी है। इसके पीछे माओ की ताकत काम कर रही है। इसे जड़ से खत्म करने के लिये जनजाति समुदाय के लोगों को उनके ऐतिहासिक और पौराणिक महापुरुषों के बारे में बताने की जरूरत है। उनमें फिर से सोच पैदा करने की जरूरत है कि यह देश उनका भी है। देश के प्रति उनकी भी जिम्मेदारी है। सच यह भी है कि देश और समाज में परिवर्तन बंदूक के बल पर आएगा भी नहीं।

इसी सोच से अभाविप जनजाति समाज के सामूहिक और विधायक सहभाग से विकास लाने की दिशा में कार्यरत है जो आने वाले समय में कारगर सिद्ध होगा।

'एकात्म मानव दर्शन' का अर्थ

पं. दीनदयाल उपाध्याय मौलिक चिंतक एवं विचारक थे। आजादी के बाद भारतीय राजनीति में पाश्चात्य विचारधाराओंअ –साम्यवाद, समाजवाद, पूंजीवाद का बोलबाला था। दीनदयालजी ने इन विचारधाराओं की सीमितताओं को चिन्हित किया और इसे अधूरा बताया। साथ ही, उन्होंने भारतीय संस्कृति पर आधारित विचार दर्शन 'एकात्म मानव दर्शन' प्रस्तुत किया। 1965 में प्रस्तुत उनके इस चिंतन का यह वर्ष स्वर्ण जयंती वर्ष के नाते मनाया जा रहा है।

दीनदयाल जी ने उदयपुर में संघ शिक्षा वर्ग में दिए गए अपने बौद्धिक, जनसंघ : सिद्धांत एवं नीति पुस्तिका एवं 22–25 अप्रैल 1965 को मुंबई में प्रस्तुत अपने चार भाषणों में 'एकात्म मानव दर्शन' विचार को रखा और उसकी व्याख्या की। हम यहां उपरोक्त अवसरों पर व्यक्त उनके विचार के मुख्यांश प्रकाशित कर रहे हैं–

पश्चिम के जितने भी दर्शन हैं, वे अधूरे हैं, वे संपूर्ण जीवन का विचार नहीं करते, किसी एक अंग का ही विचार करते हैं, इसलिए हम उनको स्वीकार नहीं करते।

पश्चिम में हर चीज को टुकड़ों में देखने की आदत है। हम सब बातों के संपूर्ण पहलुओं का विचार करते हैं। हम न तो पूंजीवाद को मानते हैं, न समाजवाद को, हम तो एकात्मवाद को मानते हैं।

मनुष्य मन, बुद्धि, आत्मा तथा शरीर इन चारों का समुच्चय है। हम उसको टुकड़ों में बांटकर विचार नहीं कर सकते।

हमारी संस्कृति की यही सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें जीवन का संपूर्ण विचार किया गया है।

हमारे विचार का आधार है –एकता, संघत्व। अन्य लोगों का आधार एकांगी है।

हम संपूर्ण विश्व में एक चैतन्य की कल्पना करते हैं– ईश्वर सब में मौजूद है। हम आत्मवादी हैं, वे अनात्मवादी हैं, जड़वादी हैं।

हम जीवन के संबंध में एकात्म और पूर्णतावादी दृष्टिकोण लेकर चले।

हमें तो पूर्णता का साक्षात्कार कर उसकी अभिव्यक्ति के लिए जीवित रहना है, कर्तव्य ही हमारी जीवन–रचना का आधार है।

भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। सृष्टि की विभिन्न सत्ताओं तथा जीवन के विभिन्न अंगों के दृश्य–भेद स्वीकार करते हुए वह उनके अंतर में एकता की खोज कर उनमें समन्वय की स्थापना करती है। परस्पर विरोध और संघर्ष के स्थान पर वह परस्परावलंबन, पूरकता, अनुकूलता और सहयोग के आधार पर सृष्टि की क्रियाओं का विचार करती है। वह एकांगी न होकर सर्वांगीण है। उसका दृष्टिकोण सांप्रदायिक अथवा वर्गवादी न होकर सर्वात्मक एवं सर्वोत्कर्षवादी है। एकात्मकता उसकी धुरी है।

भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि वह संपूर्ण जीवन का, संपूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी (Integrated) है। टुकड़े–टुकड़े में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से ठीक हो सकता है, परंतु व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं। पश्चिम की समस्या का मुख्य कारण उनका जीवन के संबंध में खंडशः विचार करना तथा फिर उन सबको थेगली लगाकर जोड़ने का प्रयत्न है।

हम यह तो स्वीकार करते हैं कि जीवन में अनेकता अर्थात् विविधता है, किंतु उसके मूल में निहित एकता को खोज निकालने का हमने सदैव प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न पूर्णतः वैज्ञानिक है, विज्ञानवेत्ता का प्रयत्न

रहता है कि वह जगत् में दिखनेवाली अव्यवस्था में से व्यवस्था ढूढ़ निकाले, उनके नियमों का पता लगाए, तदनुसार व्यवहार के नियम बनाए।

जीवन की विविधता अंतर्भूत एकता का आविष्कार है और इसलिए उनमें परस्परानुकूलता तथा परस्परपूरकता है। विविधता में एकता अथवा एकता का विविध रूपों में व्यक्तीकरण ही भारतीय संस्कृति का केंद्रस्थ विचार है।

संपूर्ण समाज या सृष्टि का ही नहीं, व्यक्ति का भी हमने एकात्म एवं संकलित विचार किया है।

व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में चारों का ध्यान रखना होगा। चारों की भूख मिटाए बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव और न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भौतिक और आध्यात्मिक दानों प्रकार की उन्नति आवश्यक है। आजीविका के साधन शांति, ज्ञान एवं तादात्म्य भाव से ये भूखें मिटती हैं। सर्वांगीण विकास की कामना ही व्यक्ति को समाज–हित में कार्य की प्रेरणा देती है।

हमने व्यक्ति के जीवन का पूर्णता के साथ तथा संकलित विचार किया है। उसकी सभी भूखों को मिटाने की व्यवस्था की है। किंतु यह ध्यान रखा है कि एक भूख को मिटाने के प्रयत्न में दूसरी भूख न पैदा कर दें अथवा दूसरे के मिटाने का मार्ग बंद न कर दें। इस हेतु चारों पुरुषार्थ का संकलित विचार हुआ है। यह पूर्ण मानव की, एकात्म मानव की कल्पना है, जो हमारा आराध्य तथा हमारी आराधना का साधन, दोनों ही है।

व्यक्ति नाम की जो वस्तु है, वह एकांगी नहीं बल्कि बहुअंगी है, परंतु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह अनेक अंगों वाला होकर भी परस्पर सहयोग, समन्वय व पूरकता और एकात्मता के साथ चल सकता है। व्यक्ति का यह गुण ईश्वर प्रदत्त है।

व्यक्ति के विकास और समाज के हित का संपादन करने के उद्देश्य से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की कल्पना की गई है। धर्म, अर्थ और काम एक–दूसरे के पूरक और पोषक हैं। मनुष्य की प्रेरणा का स्रोत तथा उसके कार्यों का मापक किसी एक को ही मानकर चलना अधूरा होगा। फिर भी अर्थ और काम की सिद्धि का साधन है धर्म, अतः वह आधारभूत है।

हमारी संपूर्ण व्यवस्था का केंद्र मानव होना चाहिए, जो 'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' के न्यायानुसार समष्टि का जीवंत प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं। जिस व्यवस्था में भिन्न रुचिलोक का विचार केवल एक औसत मानव से अथवा शरीर–मन–बुद्धि एवं आत्मायुक्त अनेक एषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थ चतुष्टयशील पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाए, वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है, जो अनेक एकात्म समष्टियों का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। एकात्म मानववाद के आधार पर हमें जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा। ■

हम किस देश के वासी हैं...

✍ अवनीश राजपूत

भारत एक मजबूत न्यायपालिका वाला लोकतांत्रिक देश है। यहां कानून की उचित प्रक्रिया काम करती है और देश के प्रत्येक नागरिक या यहां रहने वाले व्यक्ति को न्यायपूर्ण अदालती सुनवाई का अधिकार है। प्रत्येक नागरिक को समानता, जीवन, स्वतंत्रता, सम्पत्ति, अभिव्यक्ति, मजहब और अन्य अनेक प्रकार के मूलभूत अधिकार उपलब्ध हैं जो हमारे संविधान में बाकायदा दर्ज हैं। भारतीय लोकतंत्र सभी को कानून की पूरी सहूलियत प्रदान करता है। अपराध कितना भी पाशविक क्यों न हो आरोपी को अपना बचाव करने के सभी अधिकार उपलब्ध हैं। पीड़ितों के अधिकार सुनिश्चित करना शासन तंत्र की जिम्मेदारी हैं जिन्हें केंद्र या राज्य सरकार अपने समस्त संस्थानों, विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के माध्यम से कार्यान्वित करती है। अपने लोगों को सुरक्षित रखने और उनका जीवन शांति व समरसता से भरने के लिए भारत कटिबद्ध है क्योंकि यही युगों–युगों से इसकी संस्कृति रही है और आज भी है। भारत के संविधान में मौत की सजा का प्रावधान इसलिए नहीं कि भारतीय खून के प्यासे हैं और 'आंख के बदले आंख या दांत के बदले दांत' की नीति पर चलते हैं बल्कि इसलिए है कि भारत आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा। आतंकियों को यह अनुमति नहीं देगा कि वे जब चाहें हमला करें, लोगों की हत्या करें, सम्पत्ति बर्बाद कर दें या लोगों को घायल करें और खुद सुरक्षित बच जाएं ताकि दोबारा इसी तरह की करतूतों को अंजाम दे सकें।

इसी कड़ी से जुड़ा याकूब मेनन का भी मामला है। 12 मार्च 1993 को मुंबई में स्टॉक एक्सचेंज सहित 13 जगहों पर एक के बाद एक बम धमाके हुए। इन धमाकों में 257 लोग मारे गए और 700 से ज्यादा घायल हो गए। मेमन को हमले की साजिश का दोषी पाया गया और मुंबई की एक अदालत ने 2007 में उसे इसके लिए फांसी की सजा सुनाई। तब से अनेक याचिका, पुनर्निरिक्षण याचिका का दौर चला। सुप्रीम कोर्ट ने 2013 में ही याकूब मेनन की फांसी की सजा को पक्का कर दिया था। 22 साल की लम्बी कानूनी प्रक्रिया के बाद 30 जुलाई की प्रातः उसे फांसी दी गयी। यहां सुप्रीम कोर्ट की तारीफ इस बात के लिए होनी चाहिए कि उसने याकूब को पूरा मौका दिया। यहां तक कि रात 10 बजे राष्ट्रपति की तरफ से दया याचिका रद्द होने के बाद देर रात अदालत बैठी और डेढ़ घंटे तक सुनवाई की। पेशे से चार्टर एकाउंटेंट मेमन पर आरोप था कि उसने हवाला के जरिए बम हमलों के लिए धन दिया। उसने कई अभियुक्तों के लिए हवाई टिकटों का भी इंतजाम किया जिन्हें पाकिस्तान में हथियारों की ट्रेनिंग मिली। धमाकों के मुख्य साजिशकर्ता दाउद इब्राहिम और उसका साथी टाइगर मेमन तब से छुपे हुए हैं। याकूब मेमन टाइगर मेमन का छोटा भाई है। मेमन को दी गई सजा पिछले तीन सालों में भारत में हुई तीसरी फांसी है और यह तीनों सजा आतंकवाद के मामलों में दी गई है। इन मामलों में सुप्रीम कोर्ट के फैसलों से साफ है

कि आतंकवाद से निपटने के लिए फांसी की सजा जरूरी है।

याकूब मेमन की फांसी कोई पहली फांसी नहीं है जिस पर राजनीति हो रही हो। इससे पहले पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह हत्याकांड के दोषी बलवंत सिंह राजोआणा और एक अन्य आतंकवादी भुल्लर की फांसी पर जमकर राजनीति हो चुकी है। इसी तरह राजीव गांधी के हत्यारों को फांसी से बचाने के लिए लिट्टे समर्थक दलों ने तमिलनाडु में जमकर राजनीति की थी। वहां की विधानसभा में प्रस्ताव पारित हुआ था। संसद पर हमले के आरोपी अफजल गुरु को फांसी दिए जाने के बाद तत्कालीन जम्मू–कश्मीर की नैशनल कांफ्रैंस और कांग्रेस गठबंन्धन सरकार के मुखिया उमर अब्दुल्ला तो खुलकर फांसी के विरोध में उतर आये थे। क्या यह पूरे राष्ट्र के लिए शर्म की बात नहीं? निर्दोष लोगों के हत्यारों को जीवनदान दिलाने के लिए जिस उर्जा के साथ तथाकथित सेकुलर और बुद्धजीवी अपना मोर्चा सम्भालते हैं उससे तो उनकी नियत पर शक होना लाजमी है। समाजवादी पार्टी के नेता अबु आजमी और एम.आई.एम. के ओवैसी के बयान पर गौर करें तो लगता ही नहीं कि ये भारत के पक्ष में बोल रहे हैं या पाकिस्तान के पक्ष में। इनका मानना है कि अगर अदालत 15 दिन बाद फांसी दे देती तो क्या आसमान टूट जाता। सुप्रीम कोर्ट ने इतनी जल्दबाजी क्यों की, कुछ अन्य पहलू सुने जाने चाहिए थे। याकूब को एक समझौते के तहत भारत लाया गया था जिसे छुपाया गया, लिहाजा अदालत को उस पक्ष को देखते हुए गहराई से जांच करवानी चाहिए आदि–आदि। लेकिन यहां यह प्रश्न उठता है कि पिछले साल दया याचिका रद्द होने के बाद याकूब के वकीलों ने वैसी जल्दबाजी क्यों नहीं दिखाई जैसी कि अब दिखाई गई। अगर समझौते की बात है तो अदालती कार्रवाई के समय इस पक्ष को याकूब के वकीलों की तरफ से जोर–शोर से क्यों नहीं उठाया गया।

यहां यह बात गौर करने वाली है कि ये भावावेश में आकर की गयी हत्याएं नहीं हैं बल्कि साजिशकर्ताओं ने बहुत ही प्रायोजित तरीके से इसे अन्जाम दिया है। प्रशिक्षण के लिए लोगों को विदेश भेजने का षडयन्त्र रचा। नकली पासपोर्ट बनाए। विदेशों से अवैध रूप से शस्त्र एकत्र किये। इतना ही नहीं इन गद्दारों ने अपनी तरफ से भारत को चोट पहुंचाने का हर संभव प्रयास किया। बावजूद इसके कुछ लोगों ने इस स्तर तक आकर प्रतिक्रिया व्यक्त की कि याकूब को इसलिये फांसी की सजा हुई कि वह मुसलमान है, ये वही लोग हैं प्रत्येक आतंकवादी घटना के बाद बयान देते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। इसके अलावा भी एक बड़ा कुनबा याकूब के समर्थन में खड़ा हो गया जिन्हें भारतीय समाज की सुरक्षा और सम्मान से अधिक मुस्लिम तुष्टीकरण, मुस्लिम वोट बैंक की चिंता है, न ही उन्हें समाज से कुछ लेना देना है न ही देश से। मुहिम इस कदर चली कि याकूब के बचाव में बकायदा पत्र लिखा गया और हस्ताक्षर अभियान चला। इस पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले लोगों में कई बड़े नाम शामिल हैं। इनमें वरिष्ठ वकील राम जेठमलानी, कांग्रेस नेता मणि शंकर अय्यर, सीपीएम के महासचिव सीताराम येचुरी, वरिष्ठ वकील और पूर्व मंत्री प्रशांत भूषण, वरिष्ठ पत्रकार एन. राम, आनंद पटवर्धन और महेश भट्ट के नाम शामिल हैं। इस याचिका में कहा गया है, 'हम इस पत्र के जरिए महामहिम से अनुरोध करते हैं कि फांसी पर रोक लगाई जाए।' यहां यह प्रश्न उठता है कि क्या याकूब की जगह अगर बाबू बजरंगी या माया कोडनानी को फांसी की सजा हुई होती तो वे लोग जो याकूब की फांसी का विरोध कर रहे थे, क्या वे तब भी ऐसा ही करते? और वे लोग जो आज याकूब की फांसी का समर्थन कर रहे हैं, क्या वे इन लोगों को फांसी की सजा देने का समर्थन करते। ■

सोहन जी में कभी अहंकार नही: भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक सोहन सिंह की स्मृति में तालकटोरा स्टेडियम में श्रद्धांजलि सभा आयोजित

रा. स्व. संघ के वरिष्ठ प्रचारक सोहन सिंह की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते प. पू. सरसंघचालक डा. मोहनराव भागवत। मंचासीन केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह, विहिप के संरक्षक श्री अशोक सिंघल व अन्य

दिल्ली। राजधानी के तालकटोरा स्टेडियम में 18 जुलाई सायं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक सोहन सिंह की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प. पू. सरसंघचालक मोहनराव भागवत, भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री श्री राजनाथ सिंह, विश्व हिंदू परिषद् के संरक्षक श्री अशोक सिंघल ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। सोहन सिंह जी का निधन 4 जुलाई को हुआ था। 5 जुलाई को दिल्ली में निगम बोध घाट पर उनका अंतिम संस्कार हुआ।

सोहन सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सरसंघचालक मोहनराव भागवत ने कहा कि जगत में सदैव के लिए कोई नहीं आता। भगवान को भी जाना पड़ता है। कुछ लोग आते हैं और जीवन कैसा जीना बताते हैं। सोहन सिंह जी का स्वयंसेवकों के साथ परिवार जैसा संबंध था। कार्यकर्ताओं के बारे में जाँच पड़ताल करवाने वालों में से एक थे। उनके जाने से रिक्तता पैदा हुई है लेकिन ऐसे लोगों के प्रति उनका स्मरण और आगे चलने के लिए रखना चाहिए। कैसे चलना उन्होंने हमें सिखाया। सभी वक्ताओं के उद्‌बोधन में करीब एक जैसी बातें थीं, चाहे उनका संबंध रहा हो या नहीं। सोहन सिंह जी के काम करने में कोई नाटक नहीं था। उन्होंने बड़ा होने के लिए कुछ नहीं किया। सहज और स्वाभाविक रूप से रहे। उनका अभिभावक का भाव था, चिंता जरूर करते थे। उनके मन में कभी भी अहंकार का भाव नहीं आया कि दूसरों को सिखाने वाला हूँ। उनसे संपूर्ण समर्पण हमें सीखना चाहिए। संघ के कार्यकर्ता को कैसा होना चाहिए, व्यवहार कैसा होना चाहिए यह भी हमें सीखना चाहिए। सोहन सिंह जी का स्मरण करते हुए उनके जीवन को अपने आचरण से जीवित रखना है। अपने जीवन से उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए। उस परम्परा को आगे बढ़ाना है, इससे उन्हें ज्यादा आनंद मिलेगा।

गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सोहन सिंह जी से मेरा व्यक्तिगत और नजदीक का परिचय नहीं था लेकिन उनके बारे में हर किसी ने यही कहा कि वे कर्मयोगी थे। उनके जीवन से लगता है कि साधारण कार्यकर्ता अपने जीवन में असाधारण कार्य कर सकता है। ऐसे व्यक्तित्व के बारे में सुनकर लगता है कि व्यक्ति पद के कारण ही बड़ा नहीं होता, अपनी कृतियों से भी बड़ा हो सकता है। अंतिम दिनों में भी उन्होंने किसी सहयोगी को सेवा के लिए नहीं लिया। भारत की संस्कृति का उपासक बड़े मन का होता है। बड़े मन का व्यक्ति ही आध्यात्मिक होता है। वे एक आध्यात्मिक व्यक्तित्व थे। ऐसे व्यक्तित्व के लिए श्रद्धांजलि की जरूरत नहीं होती। ऐसे लोगों का व्यक्तित्व लोगों के लिए प्रेरणा बन जनता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने श्रद्धांजलि के तौर पर संदेश भेजा। संदेश में कहा गया कि सोहन सिंह जी अपने जीवन में आचार संहिता के पालन में उंच–नीच नहीं होने दी। ऐसे व्यक्तित्व का चला जाना खालीपन का अहसास कराता रहेगा। संदेश दिल्ली प्रांत सह संघचालक श्री आलोक कुमार ने पढ़कर सुनाया।

इस अवसर पर कई अखिल भारतीय अधिकारी तथा रा. स्व. संघ से जुड़े संगठनों के कार्यकर्ता मौजूद थे। कार्यक्रम के समापन पर सभी ने मौन रखने के बाद शान्ति मंत्र किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली प्रांत संघचालक श्री आलोक कुमार ने मंच संचालन किया।

■

भारतरत्न डा. कलाम को अभाविप द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भारतरत्न डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उन्हें भावपूर्ण श्रद्धाजंलि अर्पित करती है।

अ.भा.वि.प. के राष्ट्रीय महामंत्री श्रीहरि बोरिकर ने कहा कि भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न बनाने में उनका विशेष योगदान था, इसके लिये सारा देश उनका ऋणी रहेगा। उन्होंने देश के सभी राज्यों को उनके भविष्य के विकास का प्रारूप उपलब्ध कराया और उन्हें एक दृष्टि दी। सामान्य परिवार में जन्म लेकर उन्होंने अपने कर्मबल से देश के राष्ट्रपति के रूप में देश का मार्दर्शन किया। यह देश के सामान्य जनमानस के लिये गर्व का विषय है।

राष्ट्रीय सुरक्षा, भारत के उज्ज्वल भविष्य, बच्चों के विकास की दृष्टि से उनका सारा जीवन समर्पित रहा। उन्होंने देश के लाखों युवाओं को भारत के उज्ज्वल भविष्य का सुखद स्वप्न विजन– 2020 के माध्यम से दिखाते उसे पुरा करने हेतु वैचारिक जीवन–दृष्टि प्रदान की, जिसके कारण आज भारत प्रगति के नवीन पथ पर अग्रसर है।

साथ ही अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. नागेश ठाकुर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर ने भी डा. कलाम को अपनी श्रद्धाजंलि देते हुए कहा कि भारतरत्न डा. कलाम का निधन सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये अपूरणीय क्षति है, भारत को विश्व में महाशक्ति के साथ ही महान राष्ट्र बनाने के उनके सुखद स्वप्न को पूर्ण करने की दिशा में देश के युवाओं का सजग होकर आगे बढ़ना ही उन्हें सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

अभाविप भारतमाता के इस महान सपूत, युगद्रष्टा, कर्मठ वैज्ञानिक, कवि, दार्शनिक, अनुपम मार्गदर्शक भारतरत्न डा. कलाम को भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए भगवान से इस महान आत्मा को शांति व श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करती है।

देश भर में भोपाल, मुम्बई, रांची पटना व दिल्ली समेत कई स्थानों पर अभाविप द्वारा डा. अब्दुल कलाम को सार्वजनिक श्रद्धांजलि देने के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

नशामुक्त भारत के लिए जमकर दौड़ी दिल्ली

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अभाविप का नशा मुक्त भारत का संकल्प

नई दिल्ली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 66वें स्थापना दिवस के मौके पर दिल्ली में 15 अलग–अलग स्थानों पर मैराथन दौड़ समेत विभिन्न सांस्कृतिक व शारीरिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बारिश के बावजूद इन कार्यक्रमों में स्कूली विद्यार्थियों से लेकर महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और जमकर दौड़े। कार्यक्रम के माध्यम से छात्र–छात्राओं को नशा मुक्त और पर्यावरण युक्त स्वच्छ भारत का संकल्प दिलाया गया।

गौरतलब है कि अभाविप को भारत ही नहीं बल्कि विश्व का सबसे बड़े छात्र संगठन माना जाता है जो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में काम करता है। जिसकी स्थापना 9 जुलाई 1949 को हुई थी। स्थापना दिवस कार्यक्रम में अभाविप के कई वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल हुए और प्रतियोगी छात्र–छात्राओं को पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया।

अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री श्रीनिवास जहां गांधीनगर के कार्यक्रम में उपस्थित हुए। वहीं, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री व नेहरू युवा केंद्र संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने रोहिणी के कार्यक्रम में भाग लिया। उनके साथ प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मनोज त्यागी भी मौजूद रहे। इसी तरह अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री श्री रोहित चहल ने मयूर विहार, प्रदेश अध्यक्ष डा. मनु कटारिया जनकपुरी व प्रदेश उपाध्यक्ष श्री भूपेंद्र गोठवाल ने तिलक नगर में अभाविप के स्थापना दिवस सप्ताह कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इसके अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के पदाधिकारी भी जगह–जगह मैराथन रैली में युवाओं का हौंसला बढ़ाने पहुंचे थे। अध्यक्ष श्री मोहित नागर ने आइपी एक्सटेंशन और उपाध्यक्ष श्री प्रवेश मलिक ने आदर्श नगर में उपस्थित छात्र–छात्राओं को जात–पात व धर्म से ऊपर उठते हुए देश के विकास में योगदान देने का आह्वान किया। अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री रोहित चहल ने बताया कि आगे भी सामूहिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। दिल्ली में इस वर्ष 28 स्थानों पर स्थापना दिवस के कार्यक्रम हुए जिसमें कुल 6467 विद्यार्थियों ने नशा मुक्त–पर्यावरण युक्त–स्वच्छ भारत का संकल्प लिया

मिशन स्वच्छ भारत के साथ

स्वच्छ मध्यप्रदेश अभियान

हमारे प्रयासों से

अगली पीढ़ी को बचपन से ही मिले
स्वच्छता की शिक्षा

स्वच्छता के महायज्ञ में
आपकी भी हो भागीदारी

RNI No. 32464/78

राष्ट्रीय छात्र दिवस पर विभिन्न प्रांतों में कार्यक्रम